रुकमां की लड़ाई

रुकमां का जन्म नेपाल के एक पहाड़ी गांव में हुआ था। सारे गांव में गरीबी थी। कोई काम धंधा नहीं था। जमीन पथरीली थी। खेती-बाड़ी भी बहुत कम थी। हर घर में भूखे-नंगे बच्चों का ढेर था। औरतें जंगल से लकड़ी लाकर पास के कस्बे में बेचती थीं। थोड़ी बहुत सब्जी भी उगाती थीं।

रुकमां के गांव की बहुत सी लड़कियां बंबई में नौकरी करती थीं। गांव का एक आदमी धनसिंह लड़कियों को बंबई ले जाता था। उनकी पगार के एडवांस रुपए मां-बाप को देता था। ज्यादातर गांव की रोज़ी-रोटी वही थी। रुकमां की बड़ी बहन भी चार साल पहले बंबई चली गई थी। लेकिन वह कभी लौटी नहीं। बहुत कम लड़कियां वापिस आती थीं।

जब रुकमां कुछ बड़ी हुई तो उसके बाप ने धनसिंह से बात की। धनसिंह ने रुकमां के बाप को पांच हज़ार रुपए दिए। उस दिन बाप ने खूब शराब पी। मां-बाप का झगड़ा भी हुआ। पता नहीं क्यों मां नहीं चाहती थी कि रुकमां बंबई जाए।

दस साल की रुकमां तो बंबई जाने के नाम से खुश थी। वह सोचती थी कि खूब काम करके मां-बाप को पैसा भेजूंगी। छोटे भाई-बहनों का पेट भरेगा।

रुकमां बंबई पहुंची

गांव से बंबई तक का सफ़र कैसे कट गया मालूम ही नहीं पड़ा। रुकमां पहली बार रेलगाड़ी में बैठी। सब चीजें नई-नई थीं। बंबई पहुंच कर धनसिंह उसे एक घर में ले गया। वहां उसके जैसी और भी बहुत-सी लड़कियां थीं।

धनसिंह ने वहां एक औरत से दस हज़ार रुपए लिए और रुकमां को छोड़ दिया। वह बोला—

"देख रुकमां, अब तू यहीं रहेगी। जो कुछ यह अम्मा बोलेगी वैसे ही करना।"

धनसिंह को जाता देख रुकमां घबराई। यहां तो वह किसी को जानती नहीं थी। डर के मारे बेचारी बच्ची रोने लगी। उस औरत ने प्यार किया। खाना खिलाया।

दो चार दिन में रुकमां को पता लग गया कि धनसिंह ने पहले उसे उसके बाप से खरीदा और यहां बेच दिया। अब उसे और लड़कियों की तरह अपने शरीर का धंधा करना पड़ेगा। वरना मार-मार कर हड्डियां तोड़ दी जाएंगी। हफ्ते भर के अंदर ही रुकमां को ग्राहक को दे दिया गया।

रुकमां हर समय रोती रहती। दूसरी लड़कियां उसे समझाती थीं—

"रुकमां भूल जा अपने गांव को। अब तो मरते दम तक यहीं रहना है। और कोई चारा नहीं।"

रुकमां को विश्वास नहीं होता था कि उसके बाप ने जानबूझ कर उसे इस नर्क में धकेला है। अब समझ में आया कि मां क्यों नहीं उसे बंबई भेजना चाहती थी।

मौके का इंतजार

रुकमां समझ गई थी कि लड़ाई-झगड़े से काम नहीं चलेगा। यहां से निकलने के लिए मौके का इंतजार करना पड़ेगा। तब तक उनका कहा मानने में ही भलाई है। वैसे रुकमां को अभी तक विश्वास नहीं होता था कि उसके बाप ने जान-बूझ कर उसे इस नर्क में धकेला है। अब समझ में आया कि मां क्यों नहीं उसे भेजना चाहती थी। सच यही था कि खुद बाप ने उसे वेश्या बनाया।

धीरे-धीरे छः महीने बीत गए। उस घर की मालकिन भी उससे खुश थी। वह समझती थी कि रुकमां ने यह जीवन अपना लिया है। एक

रुकमां का एक ही सपना है। बड़ी होकर वह अपने देश नेपाल जाएगी। वहां बेटियों को बेचने वाले बापों और धनसिंह जैसे लड़कियों के दलालों के खिलाफ काम करेगी। तभी उसकी लड़ाई पूरी होगी

दिन एक ग्राहक ने कहा कि वह रुकमां को बाहर ले जाएगा। बाहर ले जाने के ज्यादा पैसे देने पड़ते थे। मालकिन ने इज़ाजत दे दी। ग्राहक रुकमां को लेकर समुद्र के किनारे गया।

चारों तरफ हज़ारों लोग घूम फिर रहे थे। यही मौका था जिसका रुकमां को इंतजार था। लेकिन किससे मदद मांगे, समझ में नहीं आ रहा था। पुलिस वाले तो खुद मालकिन के पास आते थे, पैसे लेने। इतने बड़े शहर में अजनबियों के बीच रुकमां को डर भी लग रहा था। वह बड़े ध्यान से अपने चारों तरफ़ लोगों को देख रही थी।

नर्क से छुटकारा

उसने देखा एक जगह कुछ लोग बड़ा-सा कैमरा लेकर फोटो खींच रहे हैं। उनमें दो लड़कियां भी थीं। पता नहीं क्यों लेकिन रुकमां को उन पर भरोसा हो गया। एकाएक वह उठी और उधर दौड़ने लगी। ग्राहक पीछे से चिल्लाया। रुकमां ने दौड़ कर कैमरे वाले आदमी का हाथ पकड़ लिया। वह रोते-रोते कह रही थी—

"मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।"

ग्राहक जो पीछे-पीछे दौड़ कर आया था यह सब देख कर, वहां से भाग गया।

कैमरे वाला आदमी एक अखबार में काम करता था। लड़कियां भी पत्रकार थीं। उन्होंने

रुकमां की पूरी कहानी सुनी। उन सबकी आंखें दुख से भर आईं। उन्होंने मिल कर तय किया कि इस बच्ची की ज़रूर मदद करेंगे। थाने में रपट दर्ज कराई। रुकमां की डाक्टरी जांच हुई। वह बीमार थी। उसमें खून की कमी थी और यौन बीमारी भी। कई महीने उसका इलाज चला। मुकदमा भी चला।

सपना रुकमां का

रुकमां को मालूम था कि वह वापिस घर नहीं जा सकती। एक पत्रकार लड़की ने रुकमां को घर के काम के लिए नौकरी दे दी। अब रुकमां स्वस्थ है। वह सच में बंबई में नौकरी कर रही है। साथ-साथ पढ़ती भी है। उसका एक सपना है कि बड़ी होकर एक दिन नेपाल ज़रूर जाएगी। वहां बेटियों को बेचने वाले बापों और धनसिंह जैसे लोगों के ख़िलाफ़ काम करेगी। तभी उसकी लड़ाई पूरी होगी। □

धनसिंह और रुकमां के बाप जैसे लोगों को क्या सज़ा दी जाए। 'सबला' के पाठक अपने सुझाव भेजें।

संपादिका